

ASHA ARCHIVES

977	
-----	--

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

योगयोगायनमः॥ ॥ अथ
गद्यपद्यपूजा॥ नासिध॥ ॐ
मिवगत्यायस्वाहा॥ ॐ
यागत्वायस्वाहा॥ ॐ
गत्वायस्वाहा॥ ३॥ सूर्या
य॥ वाक्॥ काव्ययग्यगाम
मममनानां नूनधनलक्ष्मी
संगतिवदिकवेलाहमकल
पत्रिवात्राहमयूत्रात्राग्य
व्यर्थहलगल्पनिर्वाय
चात्रच्छागमहिगपूजांकर्तु
धीसूर्याय नमः॥ ॐ
भार्गवकात्रमग्रानां नून
नांज्ञानत्रिभिरि॥ ३॥ कृगमु
च्चरत्पीयनगन्त्रीमिष्ठिवल
स्कर्त॥ ॥ एगस्कराय नमः॥ दमास
नमः॥ ॥ पूज्यनमः॥ ॥ धूर्यन
मः॥ ॥ पूजाग्यिह्यनय॥
ॐ सिद्धिस्तुक्रियार्तहृदि

नमो धनार्थाय ॥ पुष्टि नमो भूमी न
बुद्धि नमो गृहं वृत्त ॥ सर्वविघ्न
प्रथम नमो सर्वभूति कर्तुं भुवः ॥
आयुः पूर्ण च कामं चलक्ष्मी मंग
लिवर्द्धन ॥ यथा वा न प्रहृष्टा धर्म
कवचं एव गृहं प्रथमं ॥ गरुडदेव
विद्यागानां भूति गिरं वगृहं नमः
॥ कमल लुपुष्य एव नमः मस्क
प्रामि ॥ ॥ गुरु नमः काम ॥ ॐ
खलु मलुला कारं व्यापय न
चत्रा चत्र ॥ गत्यर्द दधि गियन
गमो गी गुरु वन मः ॥ ॥ न्या
मः ॥ ॐ कः ॥ अस्माय रुद्र ॥ ३ ॥
ॐ कां भू गृहा यानि मः ॥ ॐ कौ
गर्जनी यानि मः ॥ ॐ मध्वमा
यानि मः ॥ ॐ भूनामिका यानि
नमः ॥ ॐ कनिष्ठा यानि मः ॥
कः ॥ अस्माय रुद्र कत्र गलपु
ष्टाय रुद्र ॥ ॥ हृदयादि ॥

काँहृदयाय नमः॥ काँसि जम्भ
स्वाहा॥ कूँलिषायै वोषट्॥ कूँ
कवेचाय कूँ॥ काँनंगुयाय
वषट्॥ क४ अस्माय रुट्॥ ॥
अर्धपाग पूजा॥ काँहृदयाय
नमः॥ काँसि जम्भ स्वाहा॥ कूँ
लिषायै वोषट्॥ कूँकवेचा
य कूँ॥ काँनंगुयाय वषट्
क४ अस्माय रुट्॥ आवाह
नादि चंदनाक्षगपुष्पं नमः॥
॥ धनु मूर्धा दक्षिण ॥ ॥ लं
खन देव स्नान ॥ अर्ग भ श म
मिर्ग पूर्ण माना पाप प्रद म
न ॥ पूग कृत्या पयूकानां स्ना
नार्थं भ प्रशोक्ता ॥ ॥ चंद
न ॥ अ० दं मलय स र्ग न चं
दनी हिम भीत ली ॥ वीत्राक्ष
गर्चि कूँ ग गृहा ल म म सिद्धय
॥ ॥ सिद्ध ॥ अ० पूर्ण वर्द्ध नक्ष

गम्यलाकूनवीत्रहृषर्ष॥
गृहाद्यवीत्रवीप्रभीमिद्वर्न
वर्गदायकं॥ ॥ इति॥ ॥ ३॥
उपवीगमिद्वर्नवमपूषाग
म्यलाकूननी॥ गृहाद्यवीत्रवी
प्रभीमूलप्रार्फचउन्मम॥
पूष्य॥ ३॥ माल्यनाताविध्वच
ववर्षागगधनिर्मली॥ उला
पूनात्मकवीत्रगृहाद्यवीत्र
लाफय॥ ॥ अथमास॥ ना
मिय॥ उगमस्वाहा॥ ३॥ अथ
गआसनपूषा॥ उगमंआसन
वदमासननम॥ पूष्यनम
॥ ॥ इति॥ ॥ ३॥ उगमं
स्वायद्व॥ ३॥ उगमंअगुष्य
र्यानम॥ उगमंअर्जनीर्यान
म॥ उगमंमध्यमाय्यानम॥
उगमंअनामिकाय्यानम॥ उ
गमंकनिष्ठाय्यानम॥ उगमंअ

स्नायकृत्कत्रगलपृष्ठायां निम
 ४॥ ॥ हृदयादि ॥ नेंगं हृदया
 यनम४॥ नेंगीं मित्रमस्वाहा ॥ ने
 गं गिषायै वोषट् ॥ ने गे कवचा
 यद् ॥ ने (गे) न गुगयाय वषट् ॥
 ने ग४ अस्नायकृत् ॥ ॥ अर्चणा
 गुमाधनं ॥ ने क्षीना ह्रीं मथि गं पु
 र्वं अमृगं देवनिर्मगं ॥ अमृगं
 गुमहाचक्रं पूजयामि महाज
 लं ॥ ॥ अर्चणा गुपूजा ॥ ने गं ह
 दयाय नमः ॥ ने गीं मित्रमस्वा
 हा ॥ ने गं गिषायै वोषट् ॥ ने (गे)
 कवचायद् ॥ ने (गे) न गुगयाय
 वषट् ॥ ने ग४ अस्नायकृत् ॥ आ
 वाहनादिर्चनं दत्ताक्षगपूर्यन
 म४॥ (धनु) मूद्रा ॥ ॥ जलपाग
 पूजा ॥ ने वृक्षं लनम४॥ ने वि
 क्रवं नमः ॥ ने मूद्राय नमः ॥
 ने जलपागाय आवाहनादिर्च
 नं दत्ताक्षगपूर्यनम४॥ (धनु)

मत्तः ॥ अस्नायकृत् ॥ ने गं हृदयाय नमः ॥ ने गीं मित्रमस्वाहा ॥ ने गं गिषायै वोषट् ॥ ने (गे) कवचायद् ॥ ने (गे) न गुगयाय वषट् ॥ ने ग४ अस्नायकृत् ॥ ॥ अर्चणा गुमाधनं ॥ ने क्षीना ह्रीं मथि गं पु र्वं अमृगं देवनिर्मगं ॥ अमृगं गुमहाचक्रं पूजयामि महाज लं ॥ ॥ अर्चणा गुपूजा ॥ ने गं ह दयाय नमः ॥ ने गीं मित्रमस्वा हा ॥ ने गं गिषायै वोषट् ॥ ने (गे) कवचायद् ॥ ने (गे) न गुगयाय वषट् ॥ ने ग४ अस्नायकृत् ॥ आ वाहनादिर्चनं दत्ताक्षगपूर्यनम४॥ (धनु) मूद्रा ॥ ॥ जलपाग पूजा ॥ ने वृक्षं लनम४॥ ने वि क्रवं नमः ॥ ने मूद्राय नमः ॥ ने जलपागाय आवाहनादिर्च नं दत्ताक्षगपूर्यनम४॥ (धनु)

मृदा॥ ॥ आत्मपूजा॥ आत्म
प्रसिन्नननमः॥ आत्मनच
दननमः॥ आत्मनपुष्पन
मः॥ ॥ गिवलि॥ नैगं मृषा
सनायनमः॥ नैगंप्रगासे
नायनमः॥ नैगंसिहासना
यनमः॥ नैगंगलपाथव
लिङ्गद्वन्द्वस्वाहा॥ नैगंधा
द्वन्द्वलायवल्लिङ्गद्वन्द्व
स्वाहा॥ नैगंद्वन्द्वयवल्लि
ङ्गद्वन्द्वस्वाहा॥ ॥ भाहनी
साधन॥ सलीचासगंधचाय
चगन्धानगण्यद्वयधियर्का
य॥ नैवेद्यकुम्भयद्रं॥ ॥ एम
मंगुन॥ समधन॥ १०॥ ११॥ ३॥
मगतयपूजा॥ नैसर्वमाहित्य
नमः॥ ३॥ धूर्तपूजानामा
तिनीवानेअथवासवर्क॥ ॥
उत्तमा महारत्नवायो॥ वीर्य
वडवाच॥ नैश्रवत्यमातिनी

अतः स्मरनीयं गङ्गा मन्त्रवचनं गङ्गायाम्बुजं यन्मिमांसास्मरेत् स्मरेत् पुनरपि ॥

दवीनिर्मलमलनाभिनी॥ हान
ठाकि॥ पुण्डरीकवृद्धिस्त्वंगजव
हिनी॥ इतनीसर्वरुगानीमसा
प्रस्मिनव्यवस्थिते॥ भागावीजाव
लोदवीकात्रुद्धकुरुवत्सर्प॥ अ
यतिपत्रमगतवनिर्वातसंरुगि
गतामयीनि॥ मृगाव्यकुरुपाप
नाहानठाकिस्त्वामिच्छाक्रियाम
गलाभृशप्रखास्रप्रखापून॥ सु
फनागंडवत्कुटुलाकात्रुपा
पुण्डरीक॥ ठाकिस्त्वुसंगीयसं॥
एस्रनाश्रानिद्रुपाठिवाश्रंका
नामान्चवामान्चत्रोडीमनाक्षी
विकाविंद्रुपावधूगाद्वचंद्रा
रुगिस्त्वंगिकाधमभुउमकात्र
उर्ध्वकात्रनेकात्रसंयुशसंगत्व
मापयग॥ गत्वद्रुपास्वद्रुपाए
मकात्रवस्त्रायत्रीआदिगठख्या
गागत्वा॥ एवायानिद्रुपाचक्षी
कथुसंभाहनीरुद्रमागागथ

नंगभाकि ४ संसृष्टागि मूर्यम
नार्चासनीलनरगितिथीम
त्मिकाकावूरुगाहनाख्याच
मदी १४१० की १४ मशात्मिका
नृगृहीचक्रनार्चिगत्यमहाम
नर्मरागिनीधा ७४४ मगा
विंदसंभाहिनी ॥ स्यंददहप्र
गा १४४ संस्यकपत्रानंदत्रिवा
८४४ श्यप्रद ॥ १४४ वार १४४
नकी १४४ कपत्रामाहिनी १४
प्रमालान्चिग १४४ ४४ कि ४४४
सिद्धिगा १४४ १४४ सिद्धिमागावि
१४४ १४४ १४४ १४४ १४४
गि १४४ १४४ १४४ १४४ १४४
मा १४४ १४४ १४४ १४४ १४४
ला १४४ १४४ १४४ १४४ १४४
४४४ १४४ १४४ १४४ १४४
ना १४४ १४४ १४४ १४४ १४४
१४४ १४४ १४४ १४४ १४४
या १४४ १४४ १४४ १४४ १४४

त्वं न वा त्मानं ददवस्य चात्संग
पा नासृगा मंगु मागभ नूगे भोति
लिमां ठि वि न पाना नूत्र के ४ म
रु के ४ चे मं पू अ म द वी पं चा मृ
न दि व पाना त्म वे मू धु कं काल
कापालिनी नु क इ न्मा द्वि इ न्म गि
इ न्म च ग ४ पञ्च ष ८ सफ इ न्मा ८
ए वे ४ मं ए वे मं नू नाल ४ ४ ४ ४
हृ गृ लि मृ प म म अ म मं म पि य
योग वि श्या ८ वृ ग ८ ग मि लि मू धु
कं काल कापालि के दि व च म
नू नू ४ मं ग न म का न ४ का न ४
स्वा हा स्व ध का न वी ष ८ व ष ८
का न ४ का न ४ द्वा न जा गि लि न
मे शु मं गा क्ष त्रा चा त्रि लि र्वा म ह
मृ मि ४ ॥ अक्ष मृ गा वली जा पि
लि ४ सा ध के ४ पु गु के ४ मा ४ लि
मू धु ल दी क्षा गे य गि लि र्वा गी नी
वृ द म ला प के नू ड की ग न मं र्यु
अ म ॥ या गि नी या ग मि द्वि प द द

वित्वं पञ्चपगापमेलचिने ४ स्त
हपूर्वस्मृमं पञ्चपगस्य दिव्या
तप्रिहासिगामफपातालमेश्व
चत्री सिद्धि त्र व्याहगावर्कगं
किगाय ४ प (०६६६) कं ३ क का
लीद्विकालीगिकालच ४ ४ पञ्च
षट्पफचाष्टाशुचि ४ मं ममं श
४ मं दामानव ४ ॥ ध्यापि चोत्रा
ग्रिहास्तुर्धवपर्वगाग्रपि मं त्र
क्षमं दविपुगानूत्रागममहाल
क्षीप्रदहमचोत्रान्यदात्रानुस
कथुवक्रद्युगमद्युमाहादाषड्
क्षविमूर्च्छागिर्ममृयदवीत्वदी
यमूर्खपूर्वचंद्रानूकारं स्मृत
दिव्यमादिव्यसत्कृतलोत्वे
सृगद्युक्तलयपिवद्धादृष्टव
ध्वनेर्नागपाठोउजावध्वपादा
गत्रस्मृपित्वं नाम मं कीर्त्तनाद्
विमूर्च्छागिद्यात्रमहाव्याप्तिरि ४

संस्तुतपादात्रविंदद्वयौगमा
हो कालिकालाग्निरागु ४ पुंर
स्कंदगभविंदवृक्षं ५ चंदार्क
पुष्पायुधभालिमालालिसत्य
प्रकिंजल्कसत्यि ३३ त्रसर्ववीत्रां
विकरत्रवात्रवक्त्रमत्रधमग
गाहंक्षमस्यापत्रा वंक्षमस्याप
त्रा धीमिव ॥ ७ ॥ उर्वरुत्वा महाद
वात्रवेत्रमहात्मना ॥ ११ ॥ गंगा
लीगीविनिर्हिता निर्गगापत्र
मध्वरी ॥ १२ ॥ यदक्षत्रपदप्रष्टमा
गाहर्नचय ५ ॥ १३ ॥ क्षीरम
हसिभक्षविकस्यवेत्रिधुलीम
त्र ४ ॥ १४ ॥ तिथीतिवठकिम
मत्रत्वमालिनीदलुक ४ समा
पं ॥ १५ ॥ ध्रुवलीतिथि ॥ १६ ॥ पंच
वलि ॥ १७ ॥ उंगमंक्षीरगुणालायव
लिंगरुद्रगुद्रस्याहा ॥ १८ ॥ उंगमंक्षी
रुलपुत्रवद्रुक्ताथयवलि
गुद्रगुद्रस्याहा ॥ १९ ॥ उंगमंक्षीगु

कूलपुगुगलमयवलिगृह
गृहस्थाहा॥ नुंगभं हूं सिद्धिया
गिनीयावलिगृह गृहस्था
हा॥ नुंगभं हूं सिद्धिचामूधु
शं वलिगृ हूं कृगृहस्था
हा॥ ॥ आसन॥ नुंगभं आध्या
यष्टपूष्यासनायनम४॥ नुं
गभं मूष्यासनायनम४॥ नुं गभं
पद्मासनायनम४॥ ॥ अर्ध
नुंगभं गुरुवर्कुकदीचधौव
र्धचचगुरुर्द॥ दधुपवृक्ष
पागुचनागयष्टापवोगक॥
नानाएनदलमगर्धगुलिना
६॥ कर्मूर्तिग॥ मूष्यासनगध
धक्षमिद्धिदचनमासुग॥ नुं
गभं गीं गूं गूं गलधुत्रायपाइ
कीपूड उूं यामि॥ अर्धपूष्य
नम४॥ ॥ आवाहनादिमूडा
८॥ नुं गभं गलध० हागकु०
हगिष्ठगिष्ठस्थाहा॥ नुं गभं गल

पाथपाथीनमः४ अर्चनमः४ स्त्रा
ननमः४ चंदननमः४ सिंदूरन
मः४ पुष्पनमः४ ॥ गिर्याङ्गलि ॥
नुंगं गींगुंगुंगंगलपाथगीङ्ग
लिपुष्पपाथी इकापूङ्गयामि ॥
३॥ पत्रिवात्रपूजा ॥ नुंगं मृद्विदा
यनमः४ ॥ नुंगं मृद्विदायनम
४ ॥ ॐ देवलिङ्गकृङ्गकृष्णा
॥ नुंगं आमादायनमः४ ॥ ॐ
दी ॥ नुंगीप्रमादायनमः४ ॥ ॐ
दी ॥ नुंगीविद्युत्राजायनमः४ ॥
ॐ दी ॥ नुंगीविनायकायनम
४ ॥ ॐ दी ॥ नुंगं हर्षवायनम
४ ॥ ॐ दी ॥ नुंगं लब्धादत्राय
नमः४ ॥ ॐ देवलिङ्गकृङ्गकृष्णा
हा ॥ ॥ हृदयादिपूजा ॥ नुंगं हृ
दयायनमः४ ॥ ॐ वलिङ्गकृङ्ग
कृष्णाहा ॥ नुंगीसित्रमृष्णाहा ॥
ॐ दी ॥ नुंगीठावायधौषट्ठा ॥ ॐ
दी ॥ नुंगीकवचायङ्ग ॥ ॐ दी ॥
नुंगं नगुगयायवषट्ठा ॥ ॐ दी

ॐ गं अस्त्राय रुद्रा ॥ ॐ देवलि
गृक्षगृक्षस्वाहा ॥ ॥ मूलसा ॥
ॐ गं गी गूं गूं मं हा ग द प ग थ
स म कि म ॐ हि ना य पा ड का
पूजयामि ॥ ॐ दे ॥ ॥ ह्यमि
द्विपूजा ॥ ॐ मूं स्तूं कूं ह्न
सिद्धि या गि नो त्या पा ड का पू
जयामि ॥ ॐ दे ॥ ॥ मगुलपूजा
ॐ अं वृक्षमायश्चि नै रा वी थ
४ पा ड का पूजयामि ॥ ॐ दे ॥ ॥
भाहिनी पूजा ॥ ॐ सर्वभाहि ह्य
पा ड का पूजयामि ॥ ॐ दे ॥ ॥
वलि ॥ ॐ क्षां क्षगु पा लाय वलि
गृक्षगृक्षस्वाहा ॥ ॐ वां वदु का
य वलि गृक्षगृक्षस्वाहा ॥ ॐ मि
द्विचामू ॥ ॐ वलि गृक्षगृक्ष
स्वाहा ॥ ॥ ॐ हं गृका दि थ ४ पा
ड का पूजयामि ॥ ॐ दे वलि गृ
क्षगृक्षस्वाहा ॥ ॐ प्रयाग म दि थ
४ पा ड का पूजयामि ॥ ॐ दे ॥ ॐ

असिनीगमदित्य४पाइकापूज
यामि॥ॐ॥दी॥ने॥वक्रावधमदि
त्य४पाइकापूजयामि॥ॐ॥दी॥
॥ने॥सर्वरुतयो॥वलिगृद्रुग
द्रुग्याहा॥ ॥समयवलि॥ने॥
सर्वपी॥धपपी॥धनिद्यात्रोपद्या
त्रभवचो॥क्षरापक्षगर्मदाहा
सर्वदिग्गगर्मस्त्रिग४॥ॐ॥दी॥
पर्वमहाचक्र॥थीना॥धमवन
दासम॥ॐ॥दी॥वलिगृद्रुगृद्रु
ग्याहा॥ने॥उका॥नूक॥या॥र्क॥चि
उग॥सर्व॥हृद॥या॥य॥वलिगृद्रु
गृद्रुग्याहा॥यथ॥ॐ॥ॐ॥क
हृल॥प्रा॥पि॥ॐ॥दी॥अलि॥वलि॥पि
गि॥ग॥महा॥पू॥रा॥वलि॥गृद्रुगृ
द्रुग्याहा॥ ॥ला॥हा॥सि॥य॥॥नि
या॥च॥न॥या॥या॥ने॥स्याहा॥३॥
ने॥आ॥त्म॥न॥ॐ॥दी॥मा॥स॥न॥न॥म॥४
पू॥र्ष्य॥न॥म॥४॥॥या॥स॥४॥ ॥ने॥अ॥
स्मा॥य॥रू॥॥३॥क॥न॥॥ध॥न॥

ॐ कृ कनिष्ठायां कृ नमः॥ ॐ
क्ष अनामिकायां क्ष स्वाहा॥
ॐ त्व मध्यायां त्व वो षट्॥ ॐ
य गङ्गायां य दू॥ ॐ दुं अश्रु
कायां दुं व षट्॥ ॐ अ अस्त्राय
हट्॥ ॥ हृ दयादि॥ ॐ कृ हृ
याय कृ नमः॥ ॐ क्ष मित्राय
क्ष स्वाहा॥ ॐ त्व मिषाय त्व वो
षट्॥ ॐ अ कवचाय अ दू॥ ॐ
दुं अ गुण्याय व षट्॥ ॐ अ अ
स्त्राय हट्॥ ॥ अर्च पाण साध
नी॥ ॐ क्षोत्राद्विप्रयिगं पूर्व अ
मृगं देवनिर्मितं॥ अमृगं गुम
हापाणं पूत्रयामिमहाजली॥
अर्च पाण पूजा॥ ॐ श्रु ह्रं ह्रं ह्रं
ह्रं अर्च पाणायपा इकी पूजया
मि॥ धनू मू द॥ ॥ जल पाण पू
जा॥ ॐ वृक्ष लनमः॥ ॐ विष्क
वं नमः॥ ॐ रुद्राय नमः॥ ॐ ॐ
धृत्राय नमः॥ ॐ सदा विवाय

ASNA ARCHIVES

977	ASNA ARCHIVES
977	ASNA ARCHIVES

ASNA ARCHIVES

ASNA ARCHIVES

977	ASNA ARCHIVES
ASNA ARCHIVES	

2

+++++

नमः॥ (वे नमः॥ ॥ हगुद्वि
नें कों गों कुं कों कों कुं गों कों
नें॥ नें कुं हगुद्वि॥ ॥ आत्मपू
जा॥ नें आत्मनसि च नमः॥
कों सिद्धं च नमः॥ गों
अक्षयवत्॥ कुं कुं कों
पुष्पं ह॥ ॥ थजा नमः
नें कों गों कुं कों कों हगुद्वि
नमः॥ हगुद्वि॥ कुं कुं कुं
का कों कों कों कों
कुं कुं कुं नमः॥ अध्यानाम
खी कों कों किलिकिलिवि
सं हगुद्वि॥ कों कों कुं गों कों
नें कुं कुं कुं कुं गों कुं
कुं कुं कुं कुं हगुद्वि॥
कुं कों कों कों कों कों
पुष्पं हगुद्वि॥ आत्मनसि च नमः॥
नमः॥ ॥ वलि॥ नें कों सर्व
विष्णुं हगुद्वि॥ सर्वं हगुद्वि॥ कों
वलिं हगुद्वि॥ हगुद्वि॥ कों कों

हुं कं श गुपालाय यक्षं वर्लिं गृह्ण
गृह्ण स्वाहा ॥ श्रीं कं लपुगुवदु
कनाथं यक्षीं वर्लिं गृह्ण गृह्ण
स्वाहा ॥ हुं हुं सिद्धिदायिनी
यः हुं वर्लिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा
स्वर्चंगकायं स्वर्चंगं वर्लिं गृह्ण गृ
ह्ण स्वाहा ॥ श्रीं धां गृह्ण विष्णुमा
तृकायः श्रीं वर्लिं गृह्ण गृह्ण
स्वाहा ॥ श्रीं स्वस्ति नमो गुपालाय
यक्षं वर्लिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ श्रीं
श्रीं शं गुपालाय श्रीं वर्लिं गृ
ह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ श्रीं श्रीं श्रीं शं गुपा
लाय यक्षं वर्लिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥
श्रीं नमो पूजा ॥ नमो बुद्धाय नमो
नायपादुकां पूजयामि ॥ नमो वि
ष्णवे नमो नायपादुकां ॥ नमो बुद्धाय
नायपादुकां ॥ नमो श्रीं बुद्धाय
नायपादुकां ॥ नमो महाशिव
प्रसादनायपादुकां ॥ नमो वसुधैव
नायपादुकां ॥ नमो वसुधैव

[illegible]

ॐ॥ नैकुनेगुग्यायउवषट्॥
ॐ॥ नैअत्रस्त्रायत्रंरुट्॥ॐ॥
ॐ॥ नैहंगुकादित्य४पाइकांपू
ज्यामि॥ॐ॥ नैप्रयागभदि
त्य४पाइकांपूज्यामि॥ॐ॥
नैअमिगांगभदित्य४पाइकांपू
ज्यामि॥ॐ॥ नैवक्राध्म
दित्य४पाइकांपूज्यामि॥ॐ॥
ॐ॥ नैश्रीकृदिककुनायधु
कृदिका४किमहितायपाइ
कांपूज्यामि॥ॐ॥ देवलिगृक
गृकस्वाहा॥ ॥ नैपाशंनम४
॥ श्रींअर्घस्वाहा॥ श्रींचंदन
मिंदुर्वाषट्॥ ॐ॥ अक्षगद
क्षोपूष्पंरुट्॥ ॥ गुगुलि
धूपथन॥ नैवनस्पतिरवधू
पमानागंधकमोक्षम॥ आ
धुयमवदवानाधूपार्यप
तिगृक्षगा॥ ॥ दीप॥ नैअ
गरुडवहिगडउकैरुयड

[illegible]

[illegible]

नाभाक्षप्रचोदया ॥ ॥ सर्वकल्य
भूयवा ॥ ॥ अस्मदादीनां सर्व
विघ्नप्रणमनजनधनसंगति
वृद्धिमन्नाहिलषिगसिद्धार्थ
शीगल्लभयकागवल्लिघा
तयिष्या ॥ ॥ दक्षिणकाया ॥
मूलायकस्याय ॥ कुलसमग
विधा ॥ दुर्कच्छाया ॥ सकस्यान
देवगुण ॥ महामायावर्तिनी ॥
नभारत्नवाया ॥ नृदुत्तवाचा ॥ न
भास्तुगमहामायसूक्ष्मदहप
रापत्र ॥ नृकाकिष्ठीविद्युद्वाक्ष
नादाक्षविंदुमालिनी ॥ अदहा
चसमूर्त्यन्त्रचलकुविध्वत्रि
ली ॥ महाकृद्युलनीतिर्यहमा
क्षप्रालक्षत्रिणी ॥ भामसूर्या
ग्रिमध्वस्तुव्यामव्यापिपत्राप
त्र ॥ उकात्रविग्रहावस्तुहकात्रा
वृद्धिरूपिणी ॥ वालाग्रहागवस्तु
क्षेत्रनगवाक्षयवय ॥ हका
नाईकलीगस्तुपत्रकिंस्तुलमा

त्रिग॥ सकलाक्षमहामाथव
त्रदलाकपूडिग॥ वरकना
दमध्वस्तममलनेकरगदि
नी॥ अरुगिठाकलाधनेरु
दिनीवक्त्रनेधुग॥ विशुभ्रण
निलदेविलुङ्गकटिलोक्त
गि॥ वक्त्राविष्कृष्टुद्रुधु०
वृत्रधुसदाधिव४॥ नमपंच
महापंगपादमूलवावस्त्रिग
गुलाकृष्टननीदेवीनमस्तु
किन्तूपित॥ दारिपंगलमध्व
स्तममलनगिन्तूपिटी॥ विद
मध्वगगादेवीकृगिलचाईच
द्रग॥ गुप्तात्रकर्तिकागमदा
दधर्मतावलीविनी॥ उमाईहृग
गगगमेत्रीद्वादधमदियवचम
गून्यगून्यागियावस्तुहंसमध्व
व्यवस्त्रिग॥ लंबाक्षपत्रमाद
वीदक्षिष्टमकृत्रगमिनी॥ नासा
गगसमूहीलमिध्वस्तुप्रवाही
नी॥ हस्तधपत्रमानंदगालूम

द्विव्यवस्तिगा॥ नादघलि कर्म
घृष्टगुह्यकर्ममन्त्रिगा॥ क्
लसुक्ष्मत्वमं कृद्धधर्माधर्मपू
द्वयो॥ कार्यका नत कर्तृत्वं
मिथून्यनादविग्रह॥ पत्राप
नपत्रेणु द्वैतं न्यग्मभुगं क
य॥ सर्ववर्षधत्रीदवीगुप्तग
त्यागिविभुग॥ भक्तिमूलम
होयूहविंद्वीगं समीचिग
भूमतीत्रमहामायं समीसागा
सर्वतात्रिणी॥ श्रयाचविश्र
याचैवश्रयंगिचापत्राश्रिगा
गुप्तगुवीगं मध्यस्थं नमस्त
पापमाचनी॥ वीधमाश्रक
त्रीदवीधागुग्मगं व्यवस्तिगं
हृदिनी भक्तिमूलनमहायू
हसमीचिगा॥ प्रमतीप्रामती
गमत्रीमायायंगुप्रवाहिनी
धृष्टं दत्तं नवीदवीसर्वोधा
नमस्तत्रवध॥ पंचामद्वर्ष
पह्णानयाप्रजापकीर्तिना

भ्रमृगाक्षन्नुचलनमः८का
 पालिनीतिवै॥ नृगीकनीम
 हमाथनमः८का पालिनी
 दक्षुक्तविशुक्तिद्विगात्र
 काक्षरयाननी॥ नमामिद
 वदवैभीअध्याप्रधानरूपिणी
 बालामूर्खीवगवनीउमाद
 वीनभामूर्खी॥ यागिनीचवि
 यादवीगम्भीरीलक्ष्मीसप्तस्वणी
 हंसस्वर्गाद्विगदवीगम्भीरी
 भक्तिमालिनी॥ काक्षकीगुरु
 गम्भीरीदुर्गाकायायैतीतिवै
 निर्यक्रीशासमाक्षानका
 चैकाक्षत्रायत्रा॥ वाक्त्रिमाह
 वृत्रीचैवकोमात्रीवैष्णवीगम्भी
 वात्राहीचैवमाहन्दीचामूर्खी
 त्वर्यानका॥ यागम्भीत्विहि
 दवैभीकृत्वाष्टकविरवि
 नृदीचैवगुआग्र्यागम्भीति
 मयवात्रुती॥ वायव्याचैवको
 वृत्रीन्नीभनसमूदाहता॥ प्र
 यागम्भीवैष्णवीकालाभूदहासा

[illegible]

विष्णुचक्रधरा ॥ गणप्यध्याय
नुंथागिनीचक्रमध्वरुमा
मल्ललविक्रिण ॥ नमामिसि
सानार्थरुत्रवरुत्रवीप्रियं ॥
श्रीमार्गिकक ॥ नुंश्रीमन
सिचनचंदनसिंदूरपुष्प
म ॥ ॥ मल्ललविक्रिण
दवयागुस्थानरुद्रानाथानां ॥
नुंश्रीवपूर्वगार्पदरुगवार्प
चैगन्यरूपात्मकोद्धानेका
वक्रलागथालत्रिहृत्वीवक्रा
मत्रीचिनुकं ॥ लखनरुत्रव
पंचकंगनगार्गश्रीयागिनी
पंचकंचंद्राकाग्निसत्रीचि
षट्कममलर्भापाएनिर्णय
गा ॥ ॥ स्वानकुर्या ॥ न्यासलि
काया ॥ नुं गे ॥ नुं श्रायरुद्रा
३ ॥ कनकधन ॥ नुं गे ॥ नुं
गुहायानम ॥ नुं गे ॥ नुं
नीत्यानम ॥ नुं गे ॥ नुं
मात्यानम ॥ नुं गे ॥ नुं

का ल्या नमः॥ नैऋतं कनिष्ठा
ल्या नमः॥ नैऋतं भूस्त्राय ह
द्वकत्र गल पृष्ठा ल्या नमः॥
हृदयादि॥ नैऋतं हृदयाय न
मः॥ नैऋतं मित्रमस्वाहा॥ नैऋतं
मित्राय वोषेत्॥ नैऋतं कवचा
य ह्रीं॥ नैऋतं नैऋतं गुण्याय वषट्
नैऋतं भूस्त्राय हृत्॥ ॥ चक्र
पूजा॥ नैऋतं अचक्रगलमय
ह्रीं॥ ॥ अर्घ्यपात्रमर्घ्यं गृह्णा
नवलीमर्ग्यं॥ ॥ देवलिङ्ग
कगृह्णाहा॥ ॥ ब्रह्मकी॥
नैऋतं भूस्त्राय हृत्॥ ॥ हृत्
३॥ मंहान्नमूदानवली॥ अ
यं॥ ॥ श्रीगलपूजापूजि
गासिद्धमस्वा॥ ॥ सूर्यसा
क्षी अथवाक्॥ ॥ अस्मदादि
नां श्रीगलपूजासंपूर्ण
थं कृत्वा कर्मफलमाप्नोति॥

श्रीसूर्याय नमः ॥ पु
 र्वीनमः ॥ ॥ भासिथ ॥ ॥
 स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ विष्णु ॥ ॥
 भाहिनीसर्ग (बालिक) कार्य
 देवयागनिका ॥ चाक्रत पूजा
 (३) नमः ॥ थडमन सकस्यागति
 यविथ ॥ खानककाथो ॥ कू
 र्य ॥ विथ पसादस न्नाथन
 थो ॥ कूलयाहिननिथ ॥ कं
 (३) नमः ॥ ॥ गति श्रीग (ल) ठ
 पूजाविधि ४ समाप्ती ॥ ॥ ॥
 सर्व ॥ १००० ॥ सालमिति ३३
 रुद्र १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥
 शमिमाधवलालेष्टदपूरु
 कं स्वा ॥ ॥ ॥

क्षमास्तुति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 जानामि विमर्शनी ॥ पूजा चापिन जामि
 क्षमस्व पत्र मे भवतः ॥

